

आधुनिक शिक्षाक मांग पुरातन वामपंथी सौचमे परिवर्तन

अखिल कान्तिकारीक अध्यक्ष हिमाल शर्मा अपन बेटा सरल शर्माके, चीन सरकारक छात्रवृत्तिमे पाँच महिना पहिने एमबीबीएस पढ़ गेलके जे बजा लेलनि, सेहो अपन पार्टीक अधोगामी शिक्षानीतिक



तहत । तैलेल ओकरा काबिल नै बूडिलेल ऐ लेल कहल जाइछ, जे ऐस’ ओकरे नइ माओवदीक जनवादी शिक्षा-नीति आलोचित भेल अछि ।

वैश्वीकरणक अपन खास प्रभाव आ प्रभुत्व छै आ एहि संचार युगक सूचना एवं प्रविधिक आधारपर शिक्षा-व्यवस्थामे दिनानुदिन नव ताव-तेवरमे जे बदलाव आवि रहल छै, तेकरा ओहिना अनदेखी नइ कएल जा रकैछ । एहनमे हिमालके

अपन सौचमे बदलाव आन’चाही, नै कि सरलके फिर्ता बजाब’ चाहैत छलै । जे जत’स’ हुए उच्च स्तरीय दक्ष जनशक्ति निर्माण हुअइ चाही आ ई सम्पूर्ण विकासक प्रथम आवश्यकता अछि । हँ एहिमे, उच्च शिक्षा हाँसिल करएमे, अनावश्यक राजनैतिक चलखेल, सोर्स-फोर्सके निरुत्साहित क’ सुधार अननाइ जरूरी छै आ सबस’ जरूरी छै योग्यता, क्षमताबले प्रवेश पौनाइके ।

ऐ बेरके बजेटमे सबस’ बेसी, ६४अरब रुपैया विनियोजन कएल गेल अछि आ विदेश जा’क’ पढ़मे एहि देशक लगभग २०/३० अरब रुपैया सलाना पलायन भ’ रहल छै । सरकार बुधि-विचारस’ सुरखुर रहितै त’ ओहि रुपैयामे एतै क’एटा विश्वविद्यालय आ इन्सच्यूट खुजि जइ तै । नीक रहितै, राष्ट्रियता बढ़ितै जँ अपने देशमे पढा-लिखाक’, अपने ओहि ठाम रोगारीक व्यवस्था करितैक ।

सरकार एखन वामपंथीक अइ आ एकरा एखनोधरि पुरने सौच अछि आ विश्वमे भ’ रहल प्रगतिके अपने ढंगस’ देखि रहल अछि, तेकरा बदलहि पड़तै ।

रेडियो टुडेक चारीम् वार्षिकोत्सव सम्पन्न

भल इएह बुध दिन रेडियो-टुडे अपन चारीम् वार्षिकी मनाक’ पाँचम बरखमे प्रवेश शुभ-शुभ क’ कएलक अछि । देखले दिनमे ई अपन संचारी मान मनाक’ मिथिलासहित राष्ट्रिय, अन्तर्राष्ट्रिय प्रसिद्धि पाबि चुकल अछि ।

‘अंग्रेजीक टुडे माने होइछ, आइके दिन आ अपन नामे-गुणे ई रेडियो सामयिक सान्दर्भिक आ प्रतिबद्ध बनल अछि । सुसूचनाक हक-अधिकारक संग जनसरोकारी संचारी प्रतिबद्धताक भावना प्रति सकारात्मक आवेग रखने रेडियो टुडेक ख्याति सामाजिक, सांस्कृतिक आ भाषिक हिसावे बहुत स्वीकृत अछि— प्रा. विजय दत्त कहलनि— एखन एकरास’, एकर विविधतायुक्त स्तर-वृद्धिस’ आउर अपेक्षा अछि । हँ, जनकपुर टुडे पत्रिका जकाँ रेडियो टुडेके वृजकुमारजी तेहन समय नै द’क’, ऐ दुनूमे करैत आएल



दुआभागके दूर करता, से हमा विश्वास अछि ।’

संचारी-कर्म एखन जानपर खेलक’ कर’बला लगारी काज अछि, आ टुडे संचार गुप एहिपर अडल अछि । एहि एवजमे वृजकुमार यादव कए बेरि अपन देह जान कपचाक’, उमा सिंह आ अरुण सिंघानियाँ जान गमाक’ अदम्य उदाहरणीय राग-भावस’ जे ई संचारी धर्मके धग्गी धएने अछि ओ बहुत उच्च मूल्यांकनक अछि ।

हाक-वाक !

साधि समधानिक’ बनए तए’ संघीय लोकतान्त्रिक गणतान्त्रात्मक संविधान । अरबसिक’ रहए मिथिलाराज, मैथिलीक स्वायतता आ अस्मिताक पहिचान ॥

मिथिलाराज संघर्ष समिति, नेपाल

जनहा मन- लूटि लाउ, कूटि खाउ !

सरकार बजेटके ढेरिए-टाकी छिटए, लूटए

सरकार ऐ बेरि बजेटके अनेरे ढकिए-सुप्पे लूटाक’ देशक अर्थतन्त्रके तहस-नहस क’ रहल आरोप खूब कसिक’ लागल अछि । ई-ई कर’ला, ऐ-ऐ शीर्षकमे एते-एते बजेट देलिऐअ कहब, सबटा मुहकब्बी ढकबसनके गलथोंधी

धस एहि सालक बजेटक छिच्छा चलेवा अइ, कहिक’ विज्ञ-विशेषज्ञ द्वारा आलोचना कएले गेल । बजेट पेश हुअ’स’ पहिनहि संचारजगतमे आवि जायब बड़ भारी भूलि भेल कहिक’ बजेट भाषणे कालमे बहुतो बेर अधिकरीस’ राजीनामा माड गेल ,

एहिस’ संसदीय मानहानी भेल, कहिक’ नयमापति सेहो कएल गेल आ कहियो नै हुअबला एहि भारी गलतीपर छानविन समिति गठन सेहो कएल गेल । नेपाली कांग्रेसक प्रमुख सचेतक लक्ष्मण प्रसाद धिमिरेक संयोजकत्वमे माओवादीक पोस्ट बहादुर बागटी आ जयपुरी

नेपाल एखन गम्भीर संरचना विकास आ नव नेपालक संविधान निर्माणक प्रक्रियास’ गुजरि रहल समयमे देशक सम्पूर्ण नीति आ कार्यक्रम जनआन्दोलनी भावना तथा शहीदक सपनानुसारे सृजनात्मक, निर्माणात्मक चलबाक

भोम्हकरमे लोइया भरिके लेबा

—मैथिली साहित्यक महाकवि विद्यापतिक नामपर निर्माणाधीन **विद्यापति मैथिली सांस्कृतिक भवन** निर्माण कर’लेल सहयोग

—मधेश आन्दोलनक शहीद रमेश महतोके सम्मान प्रतिष्ठान स्थापनाक कार्यक्रम संचालनवास्ते अनुदान

— संचारकर्मीसबके क्षमता अभिवृद्धि कर’लेल आधुनिक सुविधायुक्त संचार-प्रतिष्ठान स्थापना ।

— नेपाल पत्रकार महासंघ भवन निर्माण कर’लेल बजेट विनियोजन

— पत्रकार सबहक आर्थिक आ सामाजिक सुरक्षाके लेल **पत्रकार विमा कोष** खड़ा कए रकम विनियोजन ।

— एहि आर्थिक वर्षस’ सरकारी कार्यालयमे निवेदन दैतकाल, निवेदनमे अनिवार्य रुपस’ दस रुपैयाक हुलाक टिकट टँसबाक नया व्यवस्था

— विद्यालयके शान्तिकेत्र घोषणा कएल गेल अछि । मुदा विद्यालय सरोकार बलासबके सहकार्यमे एहि घोषणके प्रभावकारी कार्यान्वयनक व्यवस्था ।

— राजर्षी जनक विश्वविद्यालयक स्थापनाकार्य आगू बढ़ाएल जायत ।

— जयनगर जनकपुर रेल्वेसेवाके विस्तार क’ बर्दीवास धरि विस्तारक योजना ।

मात्र अछि, कहि मुह दुसल गेल । गोपनीयता भंग कएल आरोपमे विपक्षद्वारा अर्थमन्त्रीक राजनामक माग बजेट भाषणे कालमे कएल गेल, से त’ हानि-गराइनक बात अछिऐ, बजेट कर््यान्वयन हुअपर सबके सन्देश भइए रहल अछि । जे सरकार अपने जायबला अछि आ आन त’ आन जेकरा अपनो पार्टीमे मेधा-मिलान छै ओ अगामी सालमे कोन बुत्ते-प्रभुते कथिला किछु क’ सकत ?

बहुत धरखनस’ प्रधानमन्त्री बनल भलनाथक खनाल, सबस’ बेसी मान-पान द’क’ भरत मोहन अधिकारीके अर्थमन्त्री त’ बनएलनि, धरि सोकाज नइ लागल बुझाइछ । एहि वार्षिक बजेट बन’स’ पहिनहिँ कए बेरि आवधिक, पूरक बजेट अनबाक प्रयास करितोमे ई अपन प्रयासमे सफल नै भ’ सकला । अखाढ़ तीसे गतेमे लाएल जाएबला’ बजेट, मधेशी मोर्चाक विरोधक कारणे तीत भ’ एकतीस गतेके संसदमे पेश भेल । ‘जे वर मरवेपर पादत से कोहवर की करत’ ? बला कहवी एहि लचपचिया सरकारक

अर्थमन्त्री अधिकारी देखा देलनि आ एहि कारणे सब भरस’ ऐ डपौर शंखी वितरणमुखी बजेटपरस’ आलोचना खूब कसिक’ भेल ।

कृषि-उद्योग आ राष्ट्रिय औद्यौगिकरणस’ आय-उपजा बढ़ाक’ लोके हाल-रोजगार दितै, जैस’ गरीबियो दूर होइतै आ राष्ट्रक समग्र अर्थव्यवस्था एवं विकास निर्माणक शुरुआत होइतै से चोन्हमा सरकारके सुफवे नइ कएलक अछि, जाहिस’ असलमे संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रक नव निर्माण तथा संरचना विकासक बात बनितैक । जनआन्दोलनी भावनाक पूर्ति संघीय वित्तीय अर्थव्यवस्थास’ मात्र एव’ सम्भव रहल अवस्थामे, अहू बेरि तराईके अनदेखी कनेछेपी क’ एकर सबहे आगबैतपर पानि फेरलक अछि । चरि खरब रुपैया नेपालसन ननटुनमा देशकेलेल बहुत होइछ आ एहिमेस’ कवारिक’ कतेको कल-कारखाना, उद्योगधन्धा क’ सकैत छल से नहि क’ लोके बिलटल बनिहार बनएनिहि रह’के सबहेटा



धर्ती, एकालेक भीम आचार्य, तमलोपाक हुदयेश त्रिपाठी, कांग्रेसक रमेश लेखक आ संयुक्तक कल्पना राणा सहितक सात सदस्यीय छानविन समिति बनल ।

चाही । विकास निर्माणक सबहे पेनी छनएबाक उपयुक्त समय ईहे होइतोमे राजनीतिक दल आ राजनेतासब एकरा सत्ताक खेल, आ छुद्र स्वार्थमे बेवाइल करहल

असलमे ई त’ देशक बजेटे नै छै

२०६८-६९ लेल प्रस्तुत बजेटके अहाँ की कहबै ?

अइमे कह’ सुन’के कोन बात छै । ई त’ बूझके बात छै जे ई असलमे देशके बजेटे नै छै । अपना देशमे एगो विशेष कुसंस्कार छै । जकरा जे अधिकार भेटल से ओकर पैतृक सम्पत्ति भ जाइ छै । जिम्मेवारी जाओ खटाइपर ! माने एमाले के अर्थमन्त्री त बजेट एमाले लेल देशलेल नइ !!



वृषेशचन्द्र लाल, उपाध्यक्ष, तमलोपा

से केना कहबै ? देखै नै छिए जे ऐ बेरि भोट लोभे अनेरे सब क्षेत्रमे ढेरिएहाकी बजेट उभलिक’ देलकैए ?

अहाँ अपने कहलिऐ जे भोट लोभे बजेट उभलने छैक । त भेलै नइ एमाले के बजेट ? ई सरकार नेपालक जनताके सरकारे नइ छै । एखनुका सरकार खाली वामपन्थीके सरकार छै । फोरमके एक टुकड़ा जे एहि सरकारमे अछि से वामपन्थी ! चीन समर्थक समूह अछि ! एखने उपेन्द्रजी सिंगापुर चोराकए गेला अछि । चीनसँ गुरुमन्त्र लेबए । एहिसँ उपेन्द्रजीके वास्तविक रुप साफ भ जाइत छैक । माओवादी जे गौर घटनाके छान-विन क’ रिपोर्ट देने छैक तैस’ सेहो ई बात साफ भ’ गेलै जे ओहो वामपंथीए छै । माओवादी आ एमाले आ मधेशक चीन समर्थक गुटके ई सरकार छै । एकरासभके देशक विकाससँ कोनो मतलब नइ । ईसब गरीबीके राजनीति करैत अछि । गरीबी रहतैक तब एकरा सभक दोकान चलतैक । युगोस्लावाकियाके कम्युनिस्ट पार्टीके तत्कालिन उपाध्यक्ष मिलोवान जिलास (बादमे कम्युनिस्ट विरोधलेल यातना सहएबला नेता) कहने रहैक जे वामपन्थी गरीबी नइ हटाबए चाहैत अछि । कम्युनिस्ट शासनमे कम्युनिस्ट नेतासभक तेसर वर्ग बनैत छैक जे पूँजीपतिसँ बाकि पृष्ठ ५ पर

जय माँ वैभव लक्ष्मी

प्रकाशक : **कुमार भास्कर**
सम्पादक : **प्रा. परमेश्वर कापड़ि**
उपसम्पादक **कौलास दास**
कार्यालय : जनकपुरधाम-१६, पुलचौक
फोन नं.: ०४१-५२४९५२
मो.नं. : ९८४४०२२५९४,
: ९८४४०५३९७३
: ९८४४१००१६४
मुद्रक: त्रिदेव अफसेट प्रेस
जनकपुरधाम, फोन नं.: ०४१-५२२५९०



सम्पादकीय

पहिने जनहा मनके त’ बदलू

नेपालक राजनीति अपन धर्मक धूडीस’ हटिक’ एखन खूब नीक जकाँ भुतला गेल अछि, ततवे नइ सबहे पाटीक नेता अपन व्यक्तिगत स्वार्थ आ सत्ता हथियाब’के खेलस’ राइ-बाइ भेल जा’ रहल अछि । नेपालक नव निर्माण आ संरचना विकासके हकमे ई सबस’ शुभ-मांगलिक समय होइतो एकर दुरुपयोग राजनैतिक कुकुर-कटाँउभ्रमे विता रहल अछि आ एकर मारुख भोग देखले दिनमे भोग’ पड़तै । राजनैतिक शुभ बातके लेल लोके जीउ-मन सिहाएब कोनो अर्थे नीक नइ ।

कतेको अढा-हिस्सीस’ ऐ बेरि सरकार नीति-कार्यक्रम अनलक आ बहुते धरखनस’ एकरा पास कराक’ बरख २०६८/०६९क बजेटो संसदमे पेश भेलो-उत्तर एहिमे नव संविधान बन’के, संरचना विकासके, आ अगामी चुनाव हुअके कोनो छवि-छटा खोधलोस’ देखाइ नै द’ रहल अइ । एहि कचोटक पीड़ा लोक केकरा सुनबौग’ जे एकरा रहन-भच्छन क’ लेतै ? कारण ई नीतिआ कार्यक्रम, बजेट पेशीमे सबहेके पेट एक्के नै छलैय ?

गिरहतवा छिच्छा-ढाठी छै जे अखाढी हनिक’ रोपने अगहनी लहजा खूस फैलस’ मार’ पवैए । ऐ देशमे अखैनतो विकास-निर्माणक रंग-विरंगक नया-नया योजनात्मक कार्यक्रम सहित उद्योग-व्यवसायक निर्माण शूआत करितए,आर्थिक विकासक बढ़िया-बढ़िया धस धरबितए, नव-नव प्रविधिक कृषि-उद्योगक बातसब करितए, आधुनिक विज्ञान-प्रविधिक आधारपर, नै अपने त’ आनो-आन देशी-विदेशी सहायतासबस’ करितए । से त’ मूल ई बातसब किछु करवे नै कएलकैए । आ जँ ईहे नै भेलै, तब कतबो बाप-बापक’ भाषण करत तैस’ कहूँ गरीबि-विनावरण, आर्थिक-विकास आ आय-रोजगारक वृद्धि भ’ पएतै ? अपना बल-बुतास’ आय-आर्जन करतै नै आ मडनी-चडनी क’क’, ऋण-पैच ल’ल’क’ अनेरे कतेक दिनधरि एना नाहकमे सरकारी बजेटके बँटैत रहि सकैए । लुटि लाएब कुटि खाएब बला विलटौआ बनिहरबा मानसिकताके त्यागि देश निर्माण, आर्थिक विकास, शान्ति-सुरक्षके लेल अपन अर्थतन्त्रके, अपन सम्पूर्ण राजनैतिक संयन्त्रके सड अपन नीति-कार्यक्रमके एकमुहरी क’ बढ़ब सब अर्थे देश हितक पक्षमे जायत ।

अप्पन मैथिलीक भविष्य ओहिना खल-खल हासैछै

धूआ-धजाके लेल मिथिला-मैथिली अभियानी जीवनाथ चौधरीस’ कुमार पृथुद्वारा लेल गेल अन्तर्वाताक शाब्दिक भावरूप)

एहने जे रबैया रहतै त’ मैथिलीक भविष्य हमरा चिन्ता जनक लगैए । अपनेके ?

– हमरा से नै लगैए ! हम आशावादी लोक छी आ किछु कर’, कराब’मे विश्वास रखैछी । एहि हिसावे हमरा मैथिलीक भविष्य खल-खल हँसैत देखाइ दैए ।

से केना ?

–शान्त मने, स्थिरस’ एहि बातके कए तरहें जवाब देल जा’ सकैए ।

अच्छा अपने कहियौ न । हम ने अशान्त छी आ ने अस्थिर !

– देखयौ फर्क अतइ छै । अहाँके प्रश्न सृजनात्मक आशंकाक उपज होइतो, सोभे देखने लगैछै जे अपने एखनुक मैथिलीक रचनात्मकतास’ निराश छी । दोसरमे अपनेके प्रश्नमे भ्रकभोर अछि, से एकर आओर सक्रियताके लेल । एखनुक आवश्यकता छै,— सृजनात्मक लेखनक सक्रियताक । एकर निरंतरताक सङे आउर प्रतिवद्धताक । वैश्वीकरणक परिप्रेक्ष्यमे, अपन सार्थकताके सिद्ध करबाक ।

कहने मात्रस’ ई काज सफल सिद्ध हुअबला त’ छै नै ? तब एकरा कत’स’ के शुरु करए ।

–अपना स्तरस’ सब करए । ई व्यक्तिक काज थोड़े छै, एकरा समसापयीक प्रवृत्तिके रुपमे आन’ पड़तै । संस्थागत प्रयास एहिमे बेसी उपयोगी त’ रहबे करत, हँ सरकारक सबटा प्रयास उपलब्धीमूलक बूझाइए ।

मैथिली घिघरी काटिक’ घुरमुरिया जे एखन खेला रहलैए,तब से कथी ला’ ?

– एकरा अपन परम्परागत वातावरणीय यथास्थितिवादीतामे परिवर्तन आन’ चाही । आबक युग समग्र परिवर्तन चाहै छै । परिवर्तन आन्दोलनी उपक्रमस’ सम्भव छै । एकर वाट जहिना बहुत छै, तहिना एकर सम्भावनो अनन्त छे ।

हमहूँ त’ सेहे कहैछी जे प्रतिफल विश्वसनीय कथिला नै देखाई दैए ?

– ओहि स्तरस’, ओहन ठोस ढंगस’ मैथिली रचनाधर्मिताके पक्षमे उपयुक्त सृजनात्मक वातावरण निर्माण हमरा जनिते नै भेलैए । हम एते बात त’ विश्वासपूर्वक कहि सकैछी जे एतुक्का रचनाधर्मितामे अलस तागत छै, विद्यागत अनन्त सम्भावनो छै । एतुका रंगमंच उत्कृष्ट आ बेमिसाल छै । संगीत आ नृत्य संसारक रागरंग अपूर्व छै । नै छै त’ प्रकाशनक खगता बेगरताके, नाट्य मंचनक सुविधा व्यवस्थाके, नृत्य-संगीतक प्रस्तुतीक ठोस व्यवस्थाक कमीके । ओहूस’ बढ़का कमी छै, एकर वजार-व्यवस्थापन आ व्यवसायीक लगानीक । कोनहुँ कलाके एखन आय, रोजगारस’ जोड़नहि, ई बढ़ि आ सम्हैर सकैए । नै बिसरक चाही जे कलाकारोके पेट आ जीवनक आवश्यकतासब छै ।

मैथिलीक बाटक ई जे यथार्थता छै, ओ भारी मोटा बुझाइए ? उपदेशस’ इतिहासक पन्ना त’ नै ने भरतै ?

– नइ, से कहूँ भेलैए ! एहि सब बातके रुपान्तरित कर’लेल योजनवद्ध सोंच बनब’ पड़तै । उठिक’ समर्पणात्मक प्रतिवद्धता देखबैत लागहि पड़तै । भ्रखने-तपने बड़ी पाकहि बला नै छै, आ नै बेसी निराशो हुअ’के छै । मैथिली विद्युतीय संचार माने रेडियो, एफएमके ल’ लिअ’ । ई सूचना आ प्रसारणके क्षेत्रमे अकल्पनीय कान्ति आनि, मैथिलीक उचाइ आ विस्तृत्तिके कहाँस’ कहाँ पहुँचा देलकैए । मैथिलीके, एकर भाषा-साहित्य-संस्कृतिके जन-मनस’ घर-घर धरि पहुँचा संचार-कान्तिक एकटा सुन्दरतम् स्थितिधरि पहुँचा देलकैए । लोक-चेतना आ राजनैतिक जागरणके दैनन्दिनीक आवृत्तिस’ मढ़ि देने छै । एहि संचारके पा’ क’ एतुका लोक, समाज आ समय-सन्दर्भ अगब मैथिलीमय बनि गेल अछि ।



जीवनाथ चौधरी

मिथिला-मैथिली अभियानी एवं समाजसेवी,

एहिमे करोडोक लगानी छै आ लगानीकर्ता धनेरौ छै । जे बात असलमे सरकारके कर’ चाही ओ नीजिक्षेत्र, मैथिलीक नामपर कएल गेल अछि । एकरौ उच्चमूल्यांकन आ नीक स्वीकृति भेटहिके चाही ।

बड़ नीक बात ! अच्छा कहू ऐमे अहाँ की कैलिए , अहाँक योगदान की त’ ? केहन मूल्यांकन अहाँके लोक करए ?

–हमरास’ ई प्रश्न अइ, आ की आरोप ?

ढेकीमे कुटनहि धानस’ चाउर बनैछै आ ऐ ठाम बातके हम थोड़े उसका देलिए’ ! से ऐ दुआरे जे अहाँके हाथमे दूसेर, दूढौआ आएल अइ, ताहिस’, मैथिलीके अपेक्षा बढ़लैए ।

– अपेक्षा, की लोभ ?

नै-नै, उमेद ! रामानन्द युवा क्लवक अध्यक्षक रुपमे अपने बहुत किछु कएनहुँ छिएने ।

– तब हमर मूल्यांकन ओहि ‘बहुत किछुमे’ नै अवैछै ? हम जे कहब, तैस’ बढ़िआ रहत जे लोक हमर अध्यक्षीय कार्यकालके मूल्यांकन हमर सोंच, प्रतिवद्धता, आ कार्यगत ठोस प्रयासके आधारपर करथि । एत’ हम जे किछु कहब से मुह-बड़ाइ होएत । हम जे कैलिए, तकरे मूल्यांकन करु आ कहू जे ई-ई बात अपने कएलिए आ ई-ई नै क’ सकलिये, से करबाक चाही । जे-जे विगाड़ने होएब वा गलोगप्प कएने होएब, ओकर दण्डक भागीयो बन’मे हमरा कोनो हर्ज नै अइ ।

ओहि बारेमेके हम जतेक जनै-सूनै छी, ओहिस’ बहुतो किछु अपने विभिन्न परिस्थितिमे कएने छी । मैथिलीक सेवा प्रति अपनेक ममता आ आवेगक पाछू जे मनोविज्ञान रहल होएत, से एहिस’ स्पष्ट भ’ जाएत । मन पाड़हिके हिसावे अपने अपन मुह त’ खोलियौ ।

– लोक फहट्टा उड़िआओत जे मुहबड़ाइ करैत छथि ! (प्रसंग बदलैत) मैथिलीके क्षेत्रमे हम जे किछु कएने छी, ओ सेवा-भावस’ । हमहुँ मैथलीपुत्र छी, आ ई हमरो मैथिली अछि । एहि हिसावे एकरा प्रति हमरो किछु कर्तव्य बनैत अछि । दोसरमे हम अपने किछु कर’स’ नीक, एहि क्षेत्रमे लागल लोकके सहयोग क’क’, सृजनात्मक व्यवस्थापकीय भूमिका खेलैत, एकरा आगू बढ़बैत रहलहुँ ।

बाकि पृष्ठ ५ पर

ओ जे कएलनि E-mail dhuadhajamai @ yahoo.com

अहाँ नै कहबै त’ लोक बुझतै गमतै केना ? अखैनतो जे मुहजाब लगाक’ गुम्मी सधनो, ठौंसा वेड फुलल बैसल रहबै त’ बदिअल-बहसल विन विचारीसब उदाम बनल बलधौसी बलपेली कैरते रहत ! एकरा रोक’ टोक’ आ सैर-साबतु कर’के लेल संचारी बनू आ सोभे निशंक भ’क’ E-mail करु !

हिलल खुद्दासनके लचपचिया सरकार कतेको धरखन महजरोस’ जे एहि सालके नीति आ कार्यक्रम सहित अगहस’ बिगह बजेट अनल’क’, ओहिमे संघीयराजक राजधानी बनब’के, ओकर संसद भवन,आ राज्यमुख्यालयक प्रशासकीय भवन सहित अगामी चुनावक लेल कोनो बजेट नइ जे छुटिअएल’क’, ओइस’ त’ साफ हइ जे अगिला बरखमे नै संविधान बनत, नै संघीयराज बनत आ नै चुनावे होएत । जखैन सेहे बात छै त’ जनताके उल्लु बनाक’, फुसि फटक्का संविधान बनब’के टाटकी भाभट ध’ध’क’ म्यादपर म्याद थप’के अन्हरभौली कथिला मारै हवे ?

– श्रवण कु. भ्ना, रजौल

ऐ सप्ताहक सबस’ भुक्कौल राष्ट्रिय चौल-मजाक लागल अर्थमन्त्रीक बजेट भाषण !

रुबी साह, आइएससी सेकेन्ड

विद्यापति टाइम्स जकाँ धुओ-धजामे बाल संसारके नइ बिसरबै ।

सुजित महासे७

गा.वि.स. आ जिल्ला विकासमे जखैन निवारचित जनप्रतिमण्डले नै छै तखैन ओकरा एना उभलिक’ अनेरे विकास बजेट देवाक की प्रयोजन ? सब जनैछै जे अशान्ति आ अशुरक्षा डरे, सब सचिवसब जिल्ला सदरमुकाममे पतनुकान लेने रहैए । एहनमे, ऐ बजेटके गोलियाक’ एकठौहरी एकरा उद्योग, व्यवसायमे जे लगा दितै त’ लोके आय-राजगार बढ़ितै, गरीबि दूर होइतै आ ऐ स’ असल विकास-निर्माणक काज होइतै ।

पंचलाल महतो, खड़ियानी– ४

डा. राजेन्द्र विमलक चारिटा मजल



१

अजब खेल कुर्सीकेर भाइ खेलै छी ।
हमरा किए खत्तामे एना ठेलै छी ।

हम नालीमे भातक भगवान तकैछी,
एम्हर अहाँ पाथरपर इत्र मलै छी ।

हमरा देखा इन्द्रधनुष, छीन लेलहुँ धरती,
छगुन्तामे पड़ल हम, तहिएसँ गलैछी ।

काटि-काटि घेंट अहाँ ने हँसियौ एना,
कालक फरकीपर अहूँ तँ चलै छी ।

बस्तीमे रहिकए ने बस्ती धधकाउ,
एही ठाँ कोनो घरमे अहूँ तँ पलै छी ।

दबकल अछि भयसँ सभ बच्चा हमर,
बहुरूपिया बनि हमसभ अपनेकेँ छलै छी ।

०००

(२)

रसे-रसे नाइट भए गेल समाज, हम की बाजू ?
आब भँपल अंगसँ अपने लगैए लाज, हम की बाजू ?

पतिवरता पत्नीसन जिनगी छल काबूमे,
उएह आव रंडीसन दै छै आवाज, हम की बाजू ?

इज्जति उतारयले', सभ क्यो उमताएल अछि,
क्यो देखवए तख्त आ क्यो देखवए ताज, हम की बाजू ?

अपना भीतर खोजू !



—सुनिल मल्लिक

कत' खोजैछी अहाँ नेपाल
अपना भीतर खोजू
अपन माटि-पानिमे देखू,
देहक मर्मस्थलमे देखू ।
खोजबै अहाँ भेटि जाएत
पोषित कायामे लीन हाइत
अनेकतामे एक जकाँ
भाषा-भाषीमे भेटि जायत ।
विश्वक शिखर सागरमाथाअहाँक गौरव नञि ?
की चाहैछी सीताके फेर पतालेमे धँसै नञि ?
कत' खोजैछी अहाँ नेपाल
धकधक्की सँ पुछू ।
अपन इतिहास' पुछू
अपन रागभाससँ पुछू
कत' खोजैछी अहाँ नेपाल
अपना भीतर खोजू

जीवनके गुणाभागमे,संस्कृतिक परिभाषामे
माय-बापक निश्छलतामे एहि नेपालक विविधतामे
काट-मारक परम्परा कत'सँ सिखलौँ यौ ?
कोनाक' सीता, बुद्धक संतति अहाँ कहबैछी यौ ?
जँ चाहैछी देशक नाम नेपालीपनमे खोजू
अपन मैथिलपनमे खोजू आ पहिरनमे खोजू
कत' खोजैछी अहाँ नेपाल
अपना भीतर खोजू !

अपन घर अपने बनाउ, अपन कर्म अपने बनाउ
बारीक पटुआ मीठो होइछै, साबित आव करु आउ
सभक्यो मिलि नेपाल बनेबै कोना ई बिसरबै
संघीय गणतन्त्र बनेबै मिथिलाके मान रखबै
मेची काली हमरे अछि एहि पाठके बुझू
अपन घर आडनमे खोजू, अपन खेत-खढ़िहानमे खोजू
कत' खोजैछी अहाँ नेपाल
अपना भीतर खोजू !

धर्म अओर मजहबकेर दारु बड़ सस्त छै,
पढ़ए क्यो गीता कि पढ़य क्यो नमाज, हम की बाजू ?

काल्हि छल ओ गुण्डा, आइ बनल नेता अछि,
ओकरहिलेँ प्रजातन्त्र, ओकरहि स्वराज,हम की बाजू ?

चुपू ने तँ लाशो निपत्ता करबाओत ओ,
बड़ा पैघ लोक अछि,लागत कोनो काज,हम की बाजू ?

०००

(३)

मन्दिर,मस्जिद, गुरुद्वारामे कैद भेला भगवान ।
बना देलक पपियाहा हुनको हिन्दू, मुसलमान !

तमकेर छूरा भोंकि प्रकाशो, हतलक अप्पन प्राण,
दिनकर दीनानाथे जक्खन भ' गेला बइमान !

स्वर्णक लंकाहेतु फनै छथि, सप्तसिन्धु कत वीर,
अप्पन नोरक सागरकेँ की तरता क्यो हनुमान ?

कोनाक' सुनतै भाषण, पढ़तै गीता आर कुरान,
नोनक ढिकुरी तारा जक्कर, रोटी सुरुज- चान ।

नारा,उपदेश आ' पर्चा,भंडा,उड़ा-उड़ा असमान,
धर्म होए कि राजनीति, सभ चलवए अपन दोकान ।

कत-कत लाश दफन अछि भीतर, हमसभ कबरीस्तान,
प्रेतक नगरी शहर बनल अछि,नाचय भूत-मसान ।

नव युग-सत्य

— ई. युगल किशोर लाभ

मोटगर नेता, आउर सब मुहतक्का
छौंसय एक कपुतक जत्था ।
गींड गेल देश ने लेलक ढेकार,
प्रचण्डक उल्लु भल्लु सरकार

शान्ति-सुव्यवस्था हएत सुनिश्चित
संविधान लेखन ने रहत अनिश्चित
सबहक सड़ ल' चलत सरकार
ई छल भल्लुक एकल फुफकार ।

गुप्त विमर्शस'सात सूत्रीय सनकी
अपना स्वार्थ लेल देशक बन्हकी
मुदा ने चलल सहकार्यक खेल
गुरु गुरुअइमे कपट बेमेल

शान्ति - सुरक्षा बाटे बिलाएल
संविधान लेखन बीच ओभराएल
लुटि अपहरण हिंसा संवाहक
बाँचत की देश जँ इएह संचालक ?

लुटिक धन भेल नेताक कोष
मरल गरीब, गरिबहेक दोष
चिककन चुनमुन चापलुसी भाषण
गरीबके भेटत की एहिस' राशन ?

नेताक बंगला ठाठ आ बाट
गरीबक मरैयामे कलह उचाट
भाषण स' ने भरत पेट
नोचत नेता काटित घेंट

श्रमक भरोसा श्रमपर आश
जीवनक सत्य ई करु विश्वास !

सब मर्ममे धोती
हमर सदिच्छा
हमसब बनी धोती
सभ्य सौम्य
बहुपयोगी आ निष्कलंक
निर्मल स्वच्छ सुशील व्यक्तित्वस'
जेना निकलए ज्योति !

(४)

अजब भूतबंगला अछि भीतर हमर,
राति होइते हम ककर-ककर चीख सुनै छी
कनैछी हम कखनो, हँसै छी कखनो,
आ डेरा-डेरा अपन दुनू कान मुनै छी ।

किछु सरश्ता दमतोड़लक,किछु सपना तुअल,
किछु मनोरथ दुधकटु जनमिते मरल,

हम ककर-ककर लाशके जोगाक' राखू ?
तँ अपनहुँ ले' अपनेसँ कवर खुनै छी ।

बेचैन बहुत हवा छै, घबड़ाएल छै मौसम,
आ घर-घरसँ धधराके लपट छै उठल
एकटा बच्चा ओकर दूधके डिब्बा बचावह लेल,
हम शब्दकेर केथरी दिनराति बुनै छी ।

टुटि गेल जहियासँ शीशासन दिल,
कीमत एकर ओजनमे आओर बढ़ि गेल,
एकर चुन्नी पछपड़या गेलै बनि टीस गजलमे,
तँ आवेशसँ हम एक-एक टीस चुनै छी ।

बाप होकि माय हो,बहिन होकि भाय हो,
डुबए लगै छै नाओ तँ के संग डुबै छै
सबहक हिस्सामे अपन भाग्यक रुइ बाँटल छै,
हम सभ अपन भाग्य रुइ स्वयं धुनै छी ।

उठह जनकपुर भेलै भोर

चहक' लागल चिड़िया चुनमुन
पसर खोललकै चरवाहा सुन
नव उत्साहक सनेस परसैत
करए कोइलियो सोर
उठह जनकपुर भेलै भोर

दादीक सून परातीक ता
तोड़ल निन्न सुरुज भगवान
सुतलसभकेँ जगब' लए पुनि
गुँनि उठल महजिदमे अजान
कहैए घण्टी मन्दिरक,
मनमे उठबैत हिलोर
उठह जनकपुर भेलै भोर



हम्मर-तोहर इएह धुकधुक्की
फैक्ट्रीक साइरन ट्रेनक पुक्की
खाली कर्मक जत' भरोसा
सुख-दुख जिनगीक चोरानुक्की
घरसँ बहरैहह पाछाँ जा
ता मन करह इजोर,
उठह जनकपुर भेलै भोर

अन्यायक संग लड़वालए तों
प्रगतिक पथपर बढवालए तों
मिथिलकेर अम्बरपर बिहुँसैत
चानक मुरती गढ़वालए तों
गौरवगाथा सुमिरैत अप्पन
हिम्मत करह सडोर,
उठह जनकपुर भेलै भोर

धोती

सब हालमे धोती
सब कालमे धोती
बनल सर्वोच्च नेपालमे धोती
पियरमे धोती
लालमे धोती
नेता बनबालेल
नील टिनोपालमे धोती ।
पहिरतहि बनि जाएब,
हीरा, जवाहर आ मोती
प्रौढ़ समय अएलापर धोती
बनैछ भगवानक भक्त
करैछ महानतम् कर्म
सना गोबर-माटिमे
निपराउर बनि करैछ घर आंगन शुद्ध



विजय दत्त मणि

अपन कौर अनका मुहमे

ठक-बक

देवता एगो महाभोज कएल। देवता दानव दुन्नूके ओइ भोजमे सबजना नौत परल। देवता लेल देवता सनके छप्पन व्यंजन बनल र।क्षसलेल रक्षछवा भोजन(दारु माउस सबके भेलै। गोटा गोटिक’ सब अपन अपनीकी भोज खाए बैठल। अछिन्जले बनल रहै अहगर कुड़िया पाटपर लगवैत गेल धूर कट्टा भरिमे एक एकटा पत्तल लागल रहय। परोसा पहाड़े सनके बुभु। र।छसी भोज आअ खनरी भेटके एहन हाल रहय। हरियर हुआस पहिने देवता सब ओकरा सबके सड़े एगो बुन्ना रखैत बाजल(भरि इच्छा भोन खाइत जाउ। महज खाइत काल केकरो केहुनी नै मोराए। सौ बाहि सोभे राखि क’ खाए पड़त। राछस सब मुहामुंही ताक लागल(भल भाइरे नै बाहि मोड़एतौ आ नै कौर मुहमे जएतो। पड़सल पातपरके परोसा भ’ गेल काल। सब पातपरस’ उठिक’ होहल्ला मचब लागल। देवता सबके नीचाउँचीके बात कह लागल। सब ई कहि खनाइपरस’ चलि गेल जे देवतासब खड़जनत्र क’क’खनाइ बाधक क’ देलकौ। एकरा सबके गेलाक बाद दोसर दिस देवता सबके विजो भेल। पात परसाएल। भोजन एक एकक’ परसाएल देवताक भोज अलगेस गमगम महमह करए। होउ हरियर स पहिने हिनको सबस’ कहल गेलैन(खाइत काल केहुनी मोड़िक कौर नै मारैत जाइ जाएब। सब देवता कहलकनि(बड़वेस बड़बढ़िया। सब देवता अपन अपन आगू मेहक परोसा सानि सानिक’ अपन लगभीड़ मेहक देवताके मुहमे देने जाय। ई सबके सब कैलक। सब आउर बेसीए अहलादस’ खाइत गेला। दानव अपस्वार्थी रहय, अपने मुंह पेट देखलक त’ भुक्ले पराएल। देवता सकदर्शी आ उपकारी रहए त भरि इच्छा भोजन अनका मुहमे करएने अपनो भरि मन खाएके जोगार भजार ओहिना धरा ललनि।

बिआहस’ विध भारी

एहिना कोनो गाँमे एगो पुरहितीया पंडिजी रहए। नां रहैन शिलानन्द भ्ना। ओइ पंडिजीके बहुत ज्रजमैनका रहै। एसगारजान आ कए(कए गाममे जजमनिका से हुनका देहके अंटाइने नै रहैन। एहिना एक राति उ पुरहित ऐ गामस’ पुजाक’ ओइ गाम जाइत रहए। उ असगैर रहए आ रातिबला बात रहै। बाटमे थोड़े दूर पड़ै जडल। दछिना लोभे पुरहित भूटकारने ओ बाट धएने जएवो करए आ डरे चकुअएवो करए जे कहूँ कोनो भूत(प्रेत नै आवि जाय। आ तैपरस’ मनेमन हनुमानो चलिसा पढ़ितो जाय। से पुरहित जाइत जे रहए कि एगो बढका बाध बीच बाटपर आविक’ ठाढ़ भ’ गेल आ बटघेरी क’क’ पंडिजीके पुछलक(कत’ जाइछी ? बाधके देखते डरस’ ओकरा तेरहो तरेगन बीत’ लगलै। तैयो घेंघियाइते बाजल(बिआह बरब’! बिआहके नां सुनिते बघवा लागल ओइ ठाम लटारहम कर’(नै हम जो। हमरो बिआह करा दू ! जावे बिआह नै करा देव तावे हम अहाँके जाही नै देव। बिआह ला’ एहन छिनर(भग्गल करैत देखक’ खेलल बभनाके मनमेके डर निपत्ता भ’ गेलै आ लागल एकरास’ जान छोड़ाव’के धस धरब’(छोड़(छोड़, तोरा भुते बिआह कएल नै होतौ ! तैपर बघवा गभुआएल (से कथीला’ यौ पंडिजी ? मर तोरी भला करोके नैहतन (उ लागल बातके कतडर बनब(नै तोरा गेठीमे दाम हौ जे तों कनियाँ ला’ नुआ(लहठी किन सकबही आ नै सेरे(सिदहा हौ जे तों भोज(भात करबही ! दोसरमे तोरा बुभ्कले नै हए जे बिआह स’ एकर विध भारी होइछै। ई त’ तोरासन सठिआएल पखठाएल बसके बात हब्बे नै करै f ई बात सुनिक’ बघवा लागल पंडीजीके गोरधरिया कर’(पंडिजी यौ पंडिजी ! केहुना हमरा बिआह करा’ दिअ। अहाँ जे जेन्ना कहवै हम सब सहवै लहवै। महज बिआहटा हमरा कराइए दू। तैपर बातके टोनियाँक’ निकल’ दुआरे उ पुरहितवा बाजल(सेहे, जीउ जाँतिक’ सब अवधारि ले। आ कहवे त’ ओकर भारी विध अखैनतेस’ शुरू क’ दी। बघवा रहए बड़ खरनाएल खखाएल, से जे जेना कहत से कर’ बघवा गछि लेलक। बस पंडिजी की कएलक त’ एकटा बढका बोरा अनलक आ कहलक ले तों पहिनका विध ऐ वोड़ामे गौरमुड़ीया ढुक्क’ करत’। जखैनते बघवा ओइ बोरामे ढुकल कि चट्ट द’ ओकर मुंह हनठिक’ बान्हि देलक आ लागल उपरस’ खूब जोड़(जोड़स’ डेड़ाक’ ओधबाद कर’ !

बपलहरि लैत बघवा छटपटाइत बाजल पंडिजी अहाँ त’ हमर ! जान मारै छी कि बिआह करवै छी ? तैपर बभना बाजल नै रे तोरा बिआहके विध करवै छियौ आ हे देख बजवे आ कनवे त’ हम तोरा ओहिना छोड़िक’ चलि जएवो। तब जे कहवे जे बिआह नै भेल त’ जनिहे अपन तों। धरखन्ने बघवा चुइयो शबद नै बाजल आ उ ओकरा अधकरुक’ क’ नदी कातमे ओडराक’ अपन रस्ता नपलक। बिहान भेने एगो बघिनियाँ ओइ नदीमे पानि पिअ’ आ अहर।के अहेरमे जे आएल आ बोरामे बान्हल अहराके जे खाएला’ खोललक त’ देखलक ओइ बघवाके ! एम्हर बघिनियाँके देखलक बघवा त’ खुसीस’ नेहाल भ’ गेल। उ मनेमन पुरहितके धैनवाद दिअ लागल। भल भाइ रे ओकरे कारणे हमरा एत्त’ बघिनियाँ कनियाँ पड़ि लागल ! ओकरास’ बिआह क’क’ उ दुनू परानी सुखस’ रह’ लागल।

एगो बौकला रहय। बौकला बूढ़ भ’ गेल रहय। देहस’ असक रहितो बहुत चलाक, गोहिया रहय। एक दिन बौकला एगो बड़कीटा पोखरीक किन्हेरमे जाक भोकासी पारिक’ कान लागल। पोखरीमेके माछ, घोड़ही,सितुआ, बेड़ कोकरासब छगुनाएले आएल। सब बौकलास पूछलागल (की भेलै। के की कएलकै बौकलाके। को एहन गाढ़ विपति ऐ बुहारीमे एकरा पैर गेलै से नै जानि। बौकला भाभट लटारह पसारैत बाजल(विपैत हमरा पड़ल हए, की तोरासबके। सौंसे गामके लोक एहि पोखरीमे आगि लगाव बलाहै। तों सब त’ ऐस ओरहा डाड़ी भ’ जएवे तहिना हमरा कुहेसा फटैय। सुनिक’ सबके जीउ सन्न भ’ गेल। आव ? आव केना प्राण वाचत। बौकला सबके चिन्तित देखि बाजल (हमरा अछैत तों सब नै अगुतो। तोरे सबके सड़े ऐ पोखरीमे एते दिन खेपली। विपति घड़िमे तोहर सड़ छोड़ि देबौ से हमर नेत नै कहैय। से नेत तों सब एकाएकी अबै जाइजो आ टेबाटेबी तोरा सबके एतस’ बड़ी दूर बड़का दहमे छोड़ि छोड़ि अएवौ।

बौकलाके बकजालमे सब फाँस गेल। सब एकर बात पतियाक’ उपरौंभ कर’ लागल जे हम जाएब त, पहिने हमरा एतस’ ल’ चलू। बौकलाके पौ बारह। एकरे बाट ई तकिते रहए। तै दिनस’ बौकला एकटा दूटाक’ माछ सबके लोलियाक’ पकड़ि लिए आ उड़ल उड़ल बड़का गाछ पर जा’ जा’ क’ खा आवए। खा क’ फेरु आवए आ पोखरीमे सबके सूनाक’ बाजए हम ल’ जाक’ सबके दहमे ध’ अएलिए।

ई किरदानी बहुत दिन धरि चलल। खा’ क’ मोटा गेल बकुला। एहिना एक दिन एगो कोकड़ा कहल कै बौकलाके आइ हमरा ल’चलू। बौकला कहलक चल। कोकराके लोलमे उठएलक आ लेने(लेने पहुँचल ओइ गाछपर। कोकराके बड़ डर भ’ गेलै। आश्चर्य चकित होइत बाजल(मर बौकला भाइ एत कत। जत सबके लौलिए। बौकला बाजल (मुरुख नहि तन पानिमे कहु आगि लगलैय। उत’ हमर अन्हर भौली छलौय। हे या देखही काँटक ढेंरी सबके हम एहि आनि आनि खेलियै आ तोरों ओहिना खएवौ। ई सुनिते चटस कोकरा पकड़लक चुट्टास ओकर कंठक संसरी। बौकला लाग छटपटाए। कतबो छोड़ छोड़ मरली कहए तैयो कोकरा ओकरा छोड़वे नै करए’।


कोकड़ा कहलक बौकलाके (चुपचाप चल ओत’ जतस’ हमरा अनने छले। मरता कि नै करता। उड़ल उड़ल आए घुमिके ओ पोखरीमे। अधमौगति भ’गेल रहय बौकला, तैयो कोकड़ा ओकरा ओहिना नै छोड़लक। पोखरीके सब माछके, घोड़हा सितुआ सबके बजएलक। सबके सामनेमे ओकरा अपने मुहस सहकरबएलक जे हम ठीके ऐंठामस माछ माछसबके ठकिठाक क’ ल’जाक’ बड़ी दूरक गाछपर जाक’ खा खा लैत छलिए। सुनिक सबके देह सिहरि गेलै। सब मार मारक बौकलापर दैगल। कोकड़ा बौकलके भरि ठेहुना पानिमे ल’ गेल आ टुभुक द’ पानिमे पड़ाक’ अपन जात त’ बचएवे कएलक वाँकी जीवसबके प्राण सेहो बँचा देलक।



ऊं-उं ! घर-घरुआरी, कर’स’, बकरी-पठरु चड़ब’मे अपने पिरोटैन रहैछी , त’ कखैनता क’ जएवै स्कूलमे पढ़’ !

विचार-मंथन

धान कुटू धनिया...!



डा. सुरेन्द्र लाभ
अर्थशास्त्रक प्राध्यापक

कागजी डपौरशंखी बजेट

बजेट राजनैतिक आर्थिक दस्तावेज होइतो, एखनुक नेपालक नव निर्माणकालीन अवस्थाक जेहन बजेट होएवाक चाही तेकरा सड कोनो तालमेल छैहे नै । एकरा लोकप्रिय एना बनाएल गेलै जेना कात्तिके चुनाव हुअ जा' रहल हुअए । वरदानी डपौरशंख खिस्सामे नै कहैछै- जे जते मडवे तै सबमे हम हँ कहबौ, धरि भेटतौ कातै किछु नै, तेकरे परि एहि फोंका बजेटक अछि ।


बजेट बनबैत काल, सरकार अपन आयुके विसरि गेल आ लागल बर्षोवर्षक योजना, नीतिसब बनब' । ई एकौ वर्षके नइ, एक-दूइए महिनाके बजेट, देश निर्माणक हिसाबस' अनितए, से नीक रहितै । ऐस' एकरा एखन भेल की छै त' एकरापरस' लोकक विश्वास उठि गेल छै, । एहन फुसि-फटक्का वितरणमुखी कागजी बजेटस' देशमे महगी, गरीबि, बेरोजगारी आ अशान्ति बढ़तै तथा राजनीतिपरस' लोकक विश्वास सहजे उठि जाएतै ।

शिक्षामे एहि वर्ष बहुत बेसीए प्रतिशत बजेट देलकैए । गतोवर्ष एहिना एतेक प्रतिशत देने रहै, मुदा आउट-पुट तेहन किछु नै रहलै । खाली लगानी बढ़एने शिक्षाक विकास होएबे करतै, से नै छै । सबस' पहिने आवश्यक छलै जे एहिपर विस्तृत समीक्षा एवं मूल्यांकन होइतै, यथार्थ कारणक पहचान होइतै आ एकर समीक्षा-समाधान सहित नव कार्ययोजना बना' बजेट व्यवस्था कएने, शिक्षा व्यवस्था सुधरितै । राजर्षी जनक विश्वविद्यालयक बात बहुत दिनस' होइत आएल अछि मुदा गम्भीरतापूर्वक एकरापर ध्यान नहि देल जाइछ । खाली खूस कर'ला विश्वविद्यालयके बात उठएने नै, एकर सुसंचान केना होएतै ऐ बातपर जोड़ देवाक चाही ।

मधेश विरोधी, काठमाण्डू केन्द्रित बजेट

परशादीस' लोके पेट कहियो नै भड़लैए आ ऐ बजेटमे अर्थमन्त्री अराबे फुसि-फटक्का पड़सने अछि । जेकरा सडमे कोनो ठोस कार्यक्रम नै होएतै, जेकर नीति आ कार्यक्रम काठमाण्डूक सत्तामुखी होएतै, जे एखनो मधेशके उपेक्षेस' देखतै, ओकरास' लोकके निराशा होएबे करतै । एमाले-माओवादी सरकारक एहि बजेटस' नयाँ नेपालक सन्दर्भमे, मधेशक पक्षमे कोनो सन्देश नइ द' सकल अछि । ओएह पुरनका सोंचसब राखि-राखिक' कार्यकर्ता पाल'के उमेद उसब रखने अछि ।

सबस' खराब बात त' ई देखाइ दैत छै जे ओसब संधीयता प्रति, संविधान निर्माण प्रति, सचेष्ट अछिए नइ, आ एहिस' स्पष्ट होइछ जे ईसब संविधान निर्माण आ आम चुनाव करएबे नै करत सएह नइ, असलमे एहन किछु कतौ हुअइ नइ देतै ।



डा. विजय सिंह,
तमलोपा केन्द्रिय कार्य सम्पादन समितिक सदस्य



रामअशीष यादव,
अध्यक्ष, नेपाल पत्रकार महासंघ, धनुषा

ऐस' नेपालक विकास भइए नै सकैए


ऐ सालक बजेट अनावश्यक महत्वाकांक्षी अछि । वितरण एना क' रहल अछि जेना ई विकसित देश होइक आ विकास कर'के आव कोनो काजे बाटे ने रहि गेल हुअए । एहनमे एहिस' नेपालक' विकास भइए नै सकैए ।

एखनके बजेटस संचारकर्मी आ उद्यमीक' लेल खासे कोनो व्यवस्था नै कएलक अछि । नीक रहितै जे संचारसामग्री पर भन्सार सहूलियत दितै, से नै छै । ई संचार-सामग्रीके पान-पराग गुटकाके तुलनामे कायम कएने अछि, आ एहिस' सरकारक चारिम अंग पत्रकार जगतके ठाढ़े उपहास भेल अछि ।


सम्बोधन कर'मे चुकल बजेट

एहि सालक बजेट प्रचारमुखी बेसी आ उपादेय कम अइ । नेपालक वत्तमान आवश्यकताके ई सम्बोधन करएमे चुकल अछि । संधीयता आ अगामी आम निर्वाचन प्रति मौन रहल ई बजेट समयमे संविधान नै बनत तक स्पष्ट सन्देश देने अछि जे राष्ट्र हितमे नइ अछि । महागाइ नियन्त्रण करयके दिशामे ठोस कदम उठाबएमे सर्वथा असफल रहल बजेट रोजगारी सृजना दिस सेहो गम्म अछि ।

जनकपुरक दृष्टीए सेहो बजेटके उत्तम नहि मानल जा सकैय, कारण डुबि रहल जनकपुर चुरोट कारखानाके बजेट सम्बोधन नहि कएने अछि त' राजर्षी जनक विश्वविद्यालयके सेहो अलगस' सम्बोधन नहि कएने अछि ।



रोशन कुमार भा,
पत्रकार, रेडियो मधेश



नित्यानन्द मण्डल

आत्म-स्पन्दनहीन नकमानइन बजेट

ऐ सालके बजेटमे देशक आत्मा आ जनआन्दोलन भावनाके आवाज सुनाइए नै द' रहल छै । विकास-निर्माणके आय-रोजगार विकासके ठामे लतिया, कतियाक' ई जे वितरणमुखी धिनाओन, अकथाइन बजेट लएने अछि ओ भकचोन्ह अर्थमन्त्रीक आर्थिक-खेलौड़ लगैछ ।

ई सरकार तराइ मधेशके, कला-संस्कृतिके, युवा आ महिला के सम्बन्धमे बजेट अनितए त' निक रहितै । विज्ञानक युग छै शिक्षामे आमूल परिवर्तनके आवश्यकता छै सडे पत्रकारके प्रोत्साहन देवाक बेर छै । तइ सब सम्बन्धमे ई किछ नै जकाँ कएलक अछि ।

ई त' मरतुक्की सरकारक छड़पान मार'बला बजेट अछि

देखल जाय, बजेट बनौने नइ एकरा कार्यान्वयन कएने सबटा बात बनैछै । हमरा जँ सच पूछी त' ऐ सरकारक नीति आ कार्यक्रमपरस' एकरा द्वारा बनाओल गेल वितरणमुखी बजेटपर हमरा एकोरति विश्वासे नइ, अइ दुआरे अछि जे ई कर'-धर' किछु नै पएतै । जे सरकार टाड़ होइतो नाडर अछि, जे केहुनाक' सत्ताके राजनीतिक खेल करैत जिवैए आ उ जे कहत, जे हमही सौसे नेपालमे कूदि-कूदिक' ई क' देवै, उ क' देवै, सबता महागप्प थिक ।

असलमे नेपालक एहि उठा-पटकके समयमे हमरा किछ करहि-धरहि नै पड़ए आ बैठले बैठल अपनो खाइ आ हमर कार्यकर्तो पलाए, ताहि हिसाबे ई वितरणमुखि बजेट अनलक अछि । नै त' नव नेपालक निर्माण कर'बला समयमे एहन कहू भेल' जइमे विकास निर्माणके, आय उत्पादनके कोनो ठोस सुरुआतने कएल जाय ।



काशीकान्त भा, कवि